ज़ेराफ़ा जिराफ़ा

डायने होफ़मेयर, चित्र: जेन रे

ज़ेराफ़ा जिराफ़ा

डायने होफ़मेयर

चित्र: जेन रे

अफ़्रीका के मैदानों में जहाँ घास लंबी होती है और बबूल का स्वाद मीठा होता है, वहां मिस्र और सूडान के महान पाशा शिकार करने आए.

उन्होंने एक छोटे जिराफ़ को पकड़ा, जो असल में बहुत ज़्यादा ऊंचा नहीं था. फिर उन्होंने उसे एक गोफन द्वारा ऊँट की कमर से बाँध दिया और घर वापस जाते समय उन्होंने उसे ऊँट के दूध पर ज़िंदा रखा.
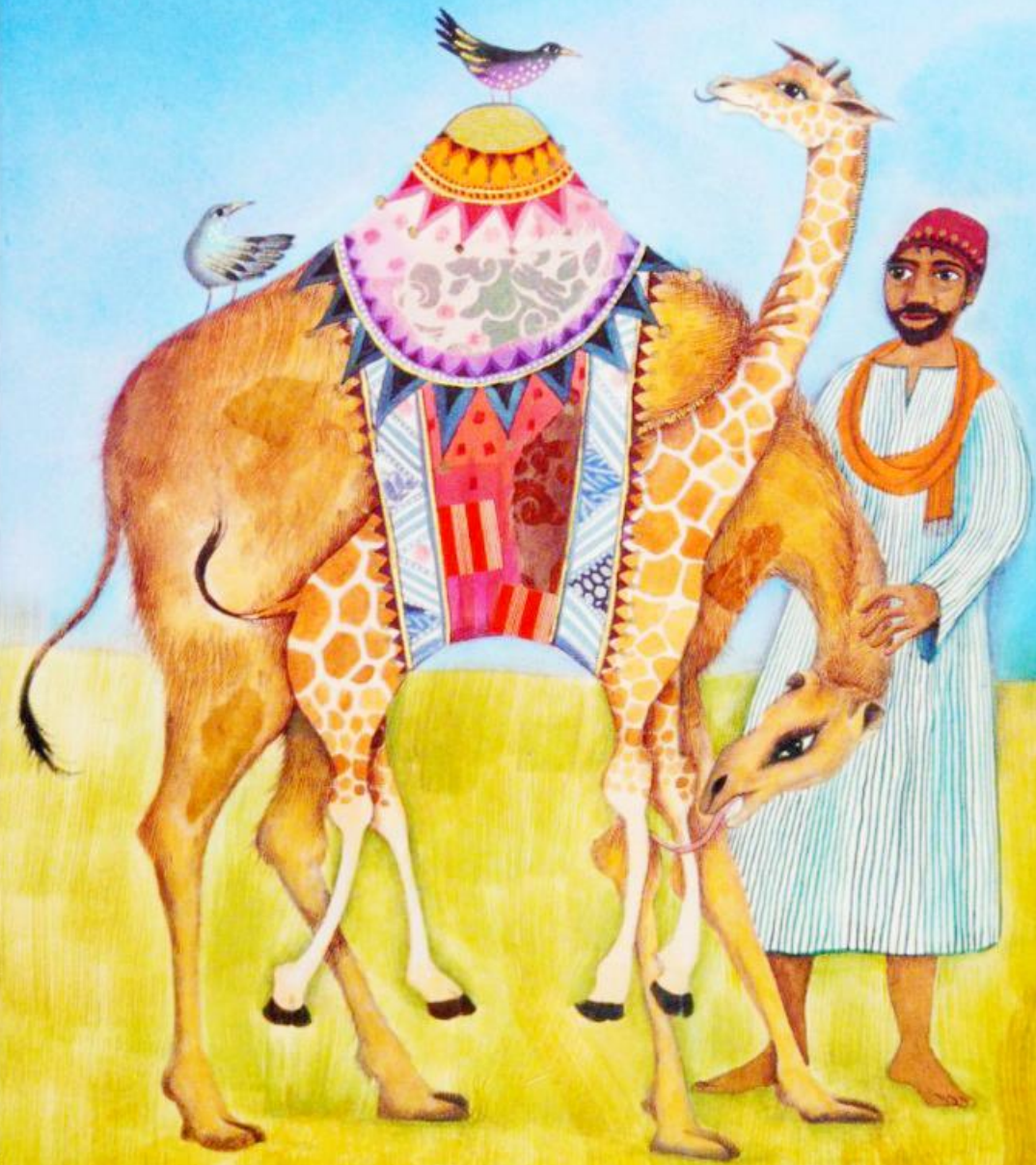
पाशा बहुत खुश हुआ.

"देखो मेरे दोस्त, वो फ्रांस के राजा के लिए एकदम बढ़िया उपहार होगा!"

पाशा ने अपने नौकर के लड़के अतीर को, उसका रखवाला नियुक्त किया.
उन्होंने उसे फ्रांस के राजा के लिए एक पत्र, और साथ में एक नक्शा भी दिया.

अतीर ने नक्शा खोला और दूरी नापी.

पेरिस बहुत दूर था.

पेरिस, अफ्रीका के किनारे से परे, दुनिया के दूसरी तरफ समुद्र के पार था.

लेकिन पहले उन्हें नील नदी पर नाव से लंबी यात्रा करनी थी.

एक फेलुका (विशेष नाव) बनाई गई, जिसमें दो सुंदर पाल थे जो हवा को पकड़ने के लिए लगातार घूमते थे, उसमें छोटे जिराफ़ को धूप से बचाने के लिए एक शामियाना भी बनाया गया.

“मैं तुम्हारा नाम ज़ेराफ़ा रखूँगा.” अतीर ने उसके गले में ताबीज़ लटकाते हुए और फुसफुसाते हुए कहा “मैं तुम्हें झील के पानी जैसा मीठा दूध पिलाऊँगा, और रात के समय मैं शामियाना पीछे हटा दूँगा ताकि तुम सितारों को निहार सको.”

वे खार्तूम के बाज़ारों से गुज़रे,
गर्म हवा उनके पालों को भर
रही थी... लक्सर अब जिराफ़
के बहुत पीछे छूट चुका था...

फिर उन्होंने शेर के चेहरे वाले
स्फ़िंक्स और वहां के पिरामिडों
को भी पीछे छोड़ दिया.

वे साही के काँटों से अपने बालों में
कंघी करती महिलाओं के पीछे से
गुज़रे, जिन्होंने उन्हें खाने
को खजूर और अनार दिए...
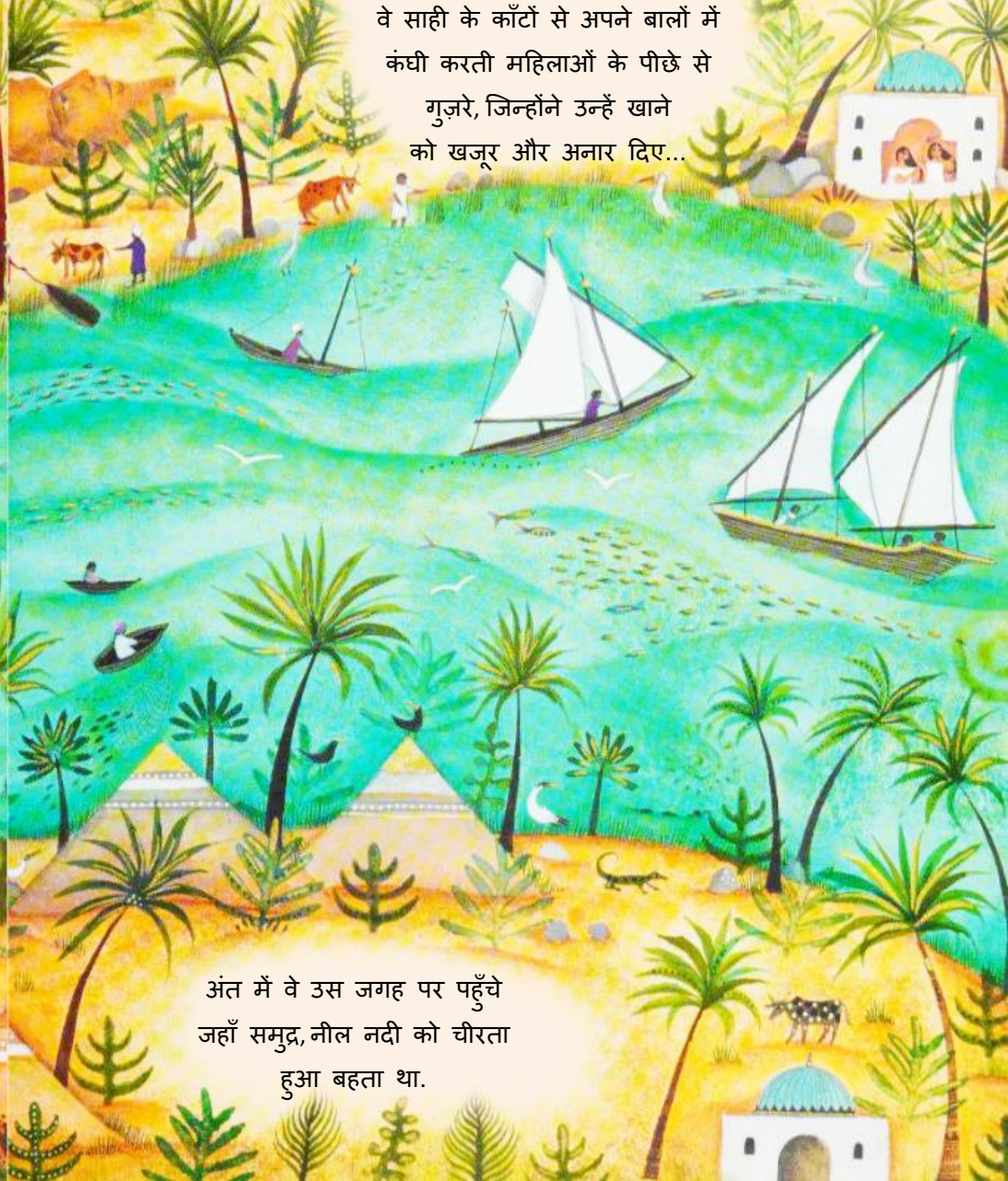
अंत में वे उस जगह पर पहुँचे
जहाँ समुद्र, नील नदी को चीरता
हुआ बहता था.

अतीर ने ज़ेराफ़ा को फ्रांस जाने वाली नाव पर चढ़ाया. और रात में नाविकों ने उस खूबसूरत लंबी गर्दन वाले प्राणी के लिए गाने गाए जो पालों के बीच से उन्हें निहार रही थी.

मार्सिले के पत्थरों पर, उसकी एक झलक पाने के लिए लोग आगे बढ़े. जब अतीर ने बताया कि उसे पेरिस जाना है, तो मेयर ने अपने हाथ ऊपर हवा में खड़े कर दिए.

"जिराफ़ के साथ? कैसे? यह असंभव है! हमें महाशय स्ट्रावगेंज़ा जो असाधारण चीज़ों के आविष्कारक हैं उनसे सलाह लेनी होगी."

फिर महाशय स्ट्रावगेंज़ा ने रेखाचित्र बनाए.

उन्होंने यहाँ एक प्रोपेलर लगाया, वहाँ एक अतिरिक्त पहिया जोड़ा.

लेकिन हर बार, मेयर ने अपना सिर न में हिलाया.

"नहीं! ऐसी मशीन कभी काम नहीं करेगी"

"हमें इस जिराफ़ को गर्म हवा के गुब्बारे से ही ले जाना होगा? असंभव!"

"हम पैदल जा सकते हैं." अतीर ने कहा.

"लेकिन पेरिस यहाँ से 550 मील दूर है!"

"देखिए ज़नाब, ज़ेराफ़ा के पैर लंबे होते हैं,"

अतीर ने कहा.
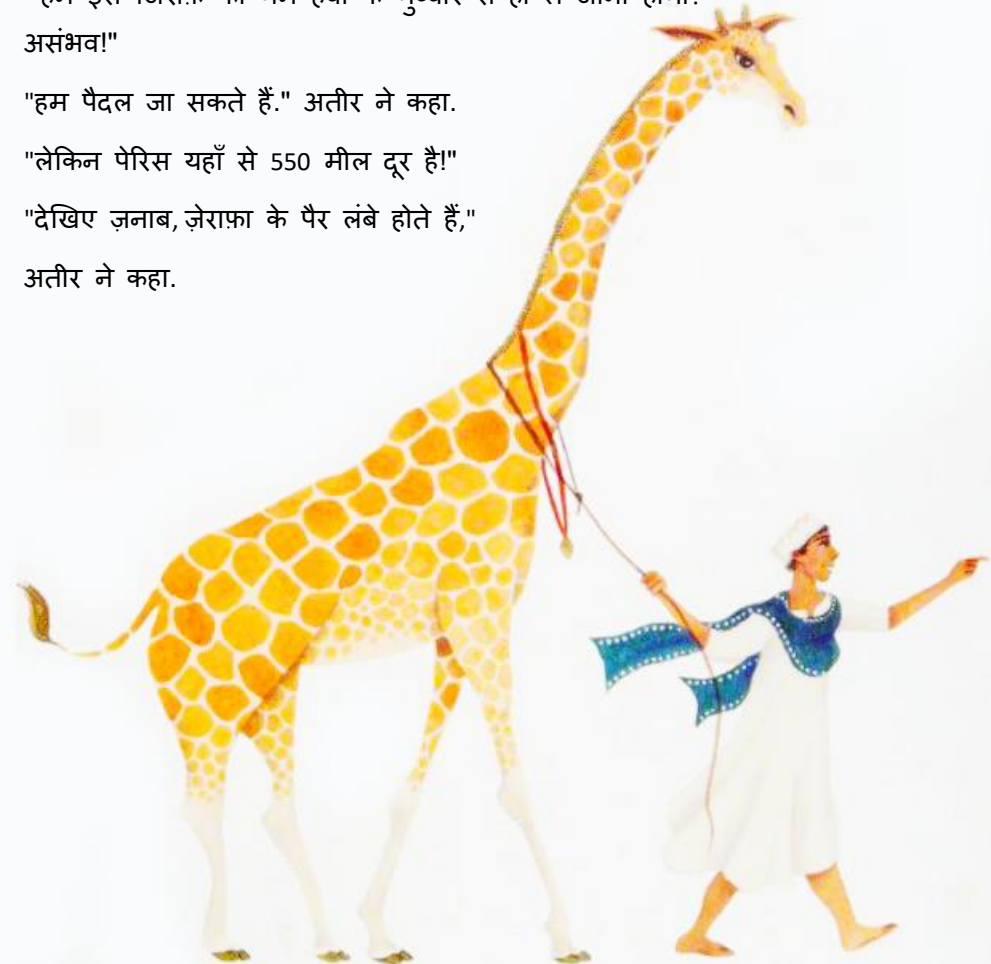
तो फिर वे घोड़ों पर सवार पहरेदारों के साथ,
एक गाड़ी, दो दूध देने वाली गायों और अतीर के
साथ ज़ेराफ़ा को आगे बढ़ाते हुए चल पड़े.

ज़ेराफ़ा एक मोमिया कपड़े - तफ़ता के बने लबादे से सुरक्षित थी.

वे बादाम और जैतून के बागों से होते हुए...
लाल खसखस के खेतों से होते हुए गुज़रे...
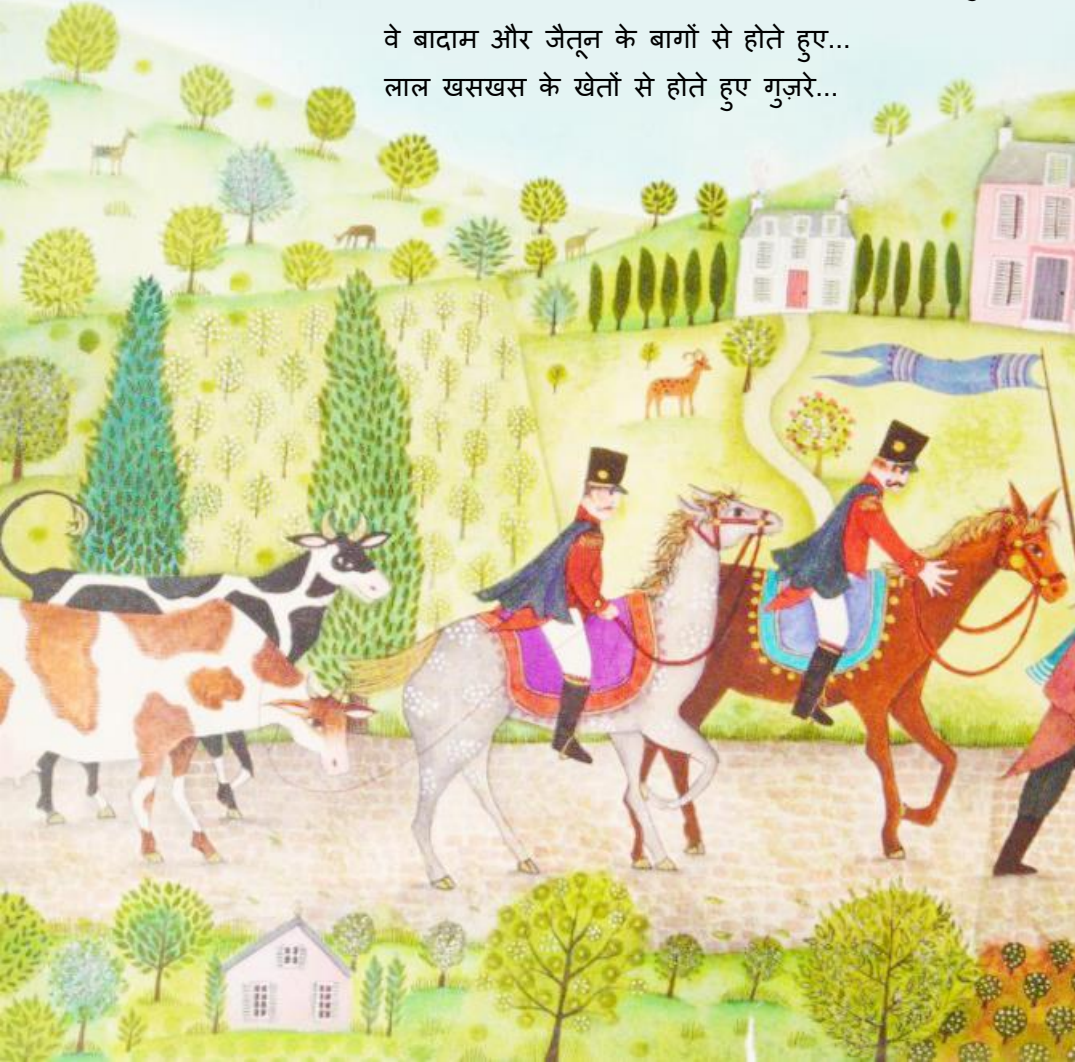
रोन घाटी के अंगूर के बागों से होते हुए, जहाँ मिस्ट्रल
हवा इतनी ठंडी थी कि उन्हें तफ़ता के लबादे को फर
के ऊनी लबादे से बदलना पड़ा.

इस अद्भुत जीव की खबर जल्द
ही ल्योन में फैल गई; सैकड़ों लोग
उसे देखने के लिए उमड़ पड़े.
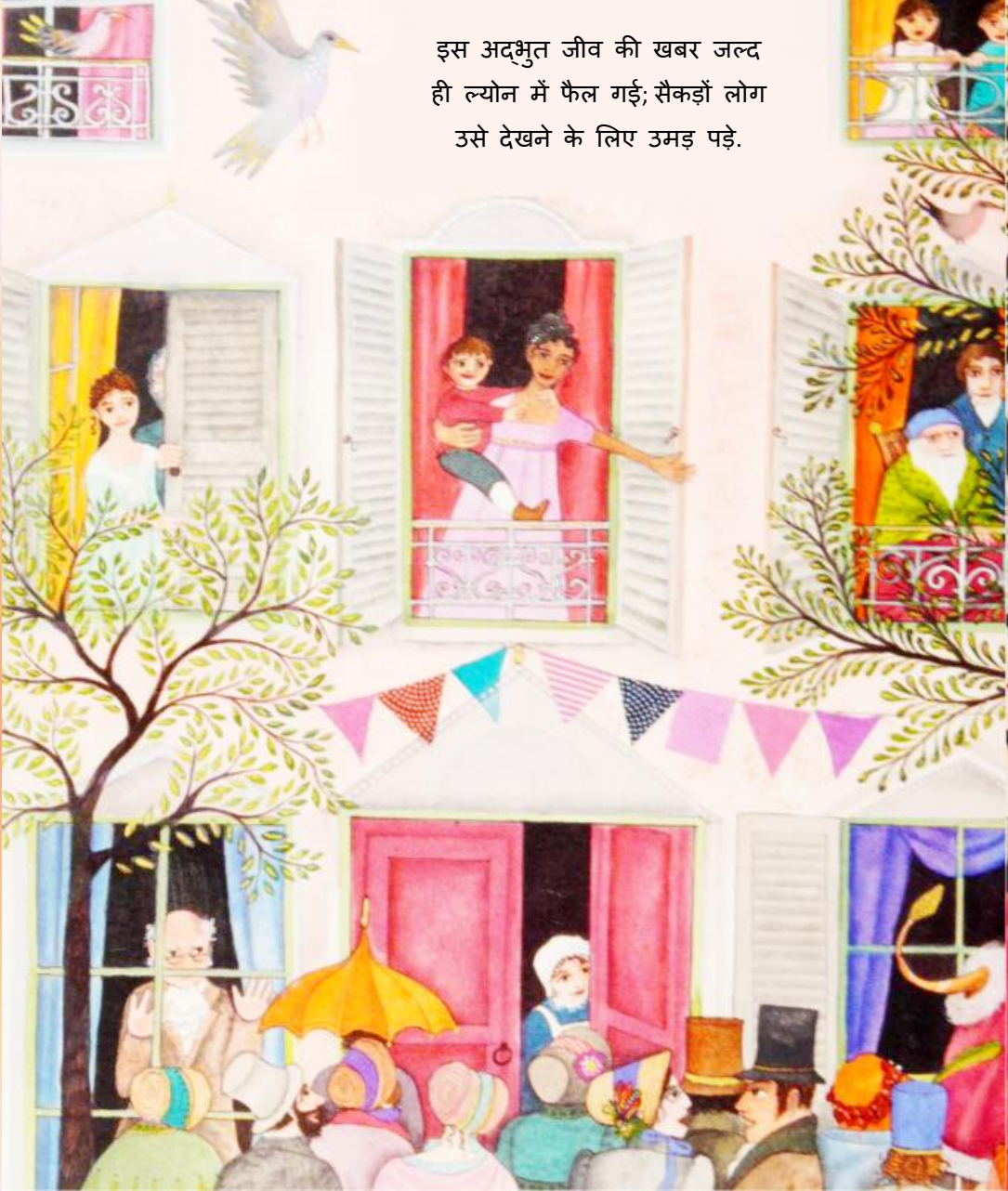
जब वे पेरिस के पास पहुँचे, तो हज़ारों लोग
सड़क पर खड़े होकर उसकी एक झलक पाने
को लालायित थे. "यह अफ्रीका का जीव है!"
"अफ्रीका का ज़ेराफ़ा!"
"ज़ेराफ़ा जिराफ़ा!"
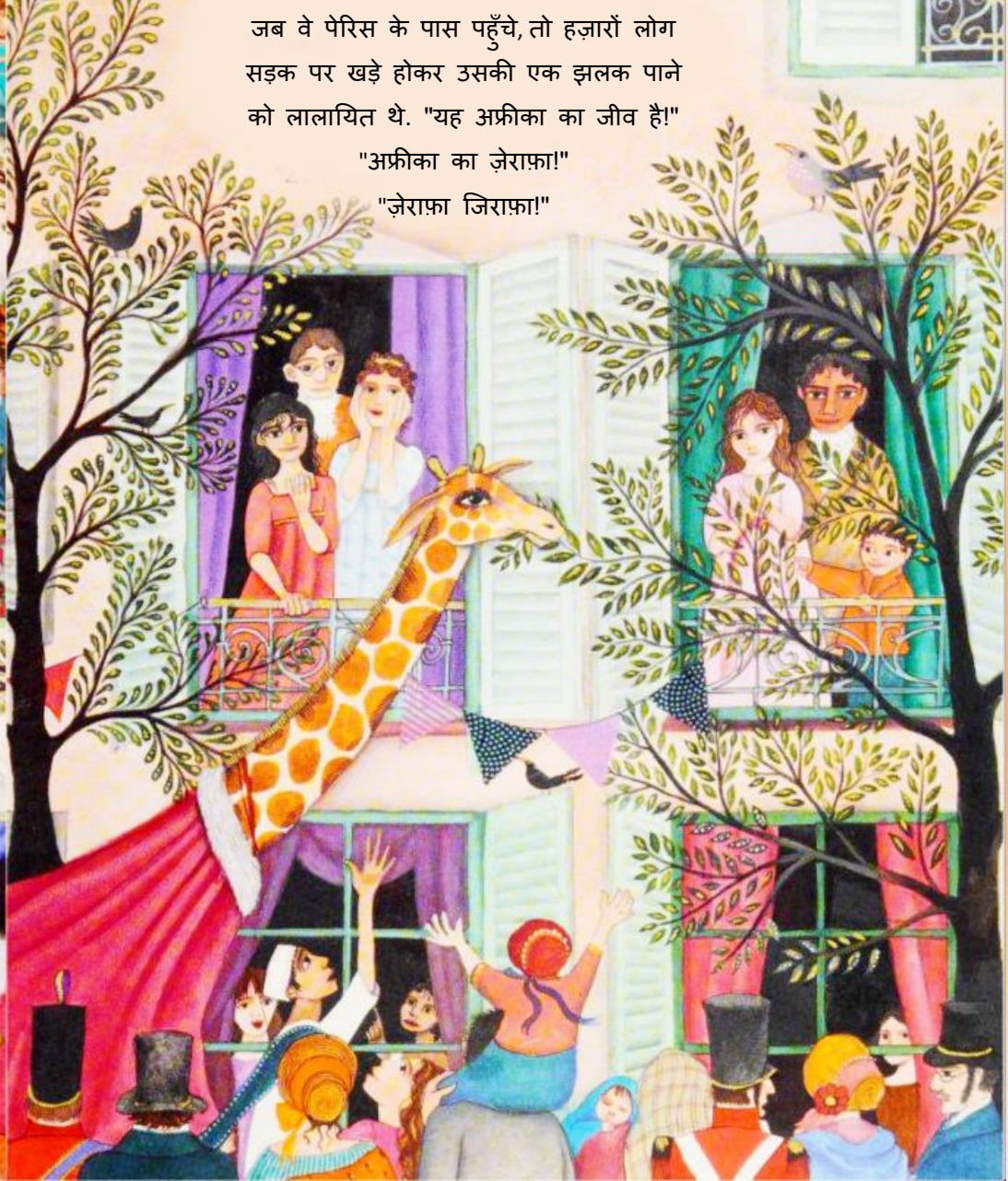
बच्चे भीड़ के बीच से उसके धब्बे गिनने के लिए निकल पड़े.

महिलाएँ सैलून की खिड़कियों से झुककर उसके कानों को गुदगुदाती थीं.

लेकिन ज़ेराफ़ा ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया.

वह अफ्रीका के मैदानों की तरह ही पेड़ों की चोटियों से पत्ते कुतरती हुई चैंप्स-एलिसीज़ में टहल रही थी.

सेंट-क्लाउड के महल में रानी ने एक भोज का आयोजन किया.

मेहमान, ज़ेराफ़ा की प्रशंसा करने के लिए चमकीले यूनिफ़ॉर्म और सरसराहट वाले तफ़ता के बने कपड़ों में एकत्र हुए.

"कितना सुंदर प्राणी है!" पुरुषों ने कहा.

"वह कितनी प्यारी है!" महिलाओं ने आह भरी.

"कितनी लंबी पलकें!"

"कितनी काली जीभ!"

जार्डिन डेस प्लांट्स में, राजा ने लकड़ी के फर्श और दीवारों पर पुआल की मोज़ेक के साथ एक गोल आकार का कमरा तैयार करवाया. लोग उसे देखने के लिए हज़ारों की संख्या में आए.

पेरिस को ज़ेराफ़ा से प्यार हो गया.

लोगों ने उस पर कविताएँ और गीत लिखे.

मालियों ने झाड़ियों को तराशकर जिराफ़ बनाए.

बेकर्स ने जिराफ़ के आकार के बिस्कुट बनाए.

कुत्ते धब्बेदार जैकेट पहनने लगे. पुरुष लंबी टोपी पहनने लगे.

लड़कियाँ अपनी गर्दन के चारों ओर लाल रिबन लपेटने लगीं.

महिलाएँ अपनी पलकों पर लंबी पलकें चिपकाती थीं और

अपने बालों को जिराफ़ की तरह स्टाइल में घुमाती थीं...

जिराफ़ इतना ऊँचा था कि महिलाओं को उसे पेरिस में

देखने के लिए अपनी गाड़ियों के अंदर लेटना पड़ता था.

शाम को, भीड़ के चले जाने के बाद,

राजा की पोती, लुईस मैरी थेरेसी चुपके से बगीचे में गई.

वह सीढ़ी चढ़कर ऊपर के मंच पर पहुँची,

अब वह ज़ेराफ़ा के बिलकुल सामने खड़ी थी

उसने ज़ेराफ़ा के बालों में कंघी की और उसे सेब खिलाए.
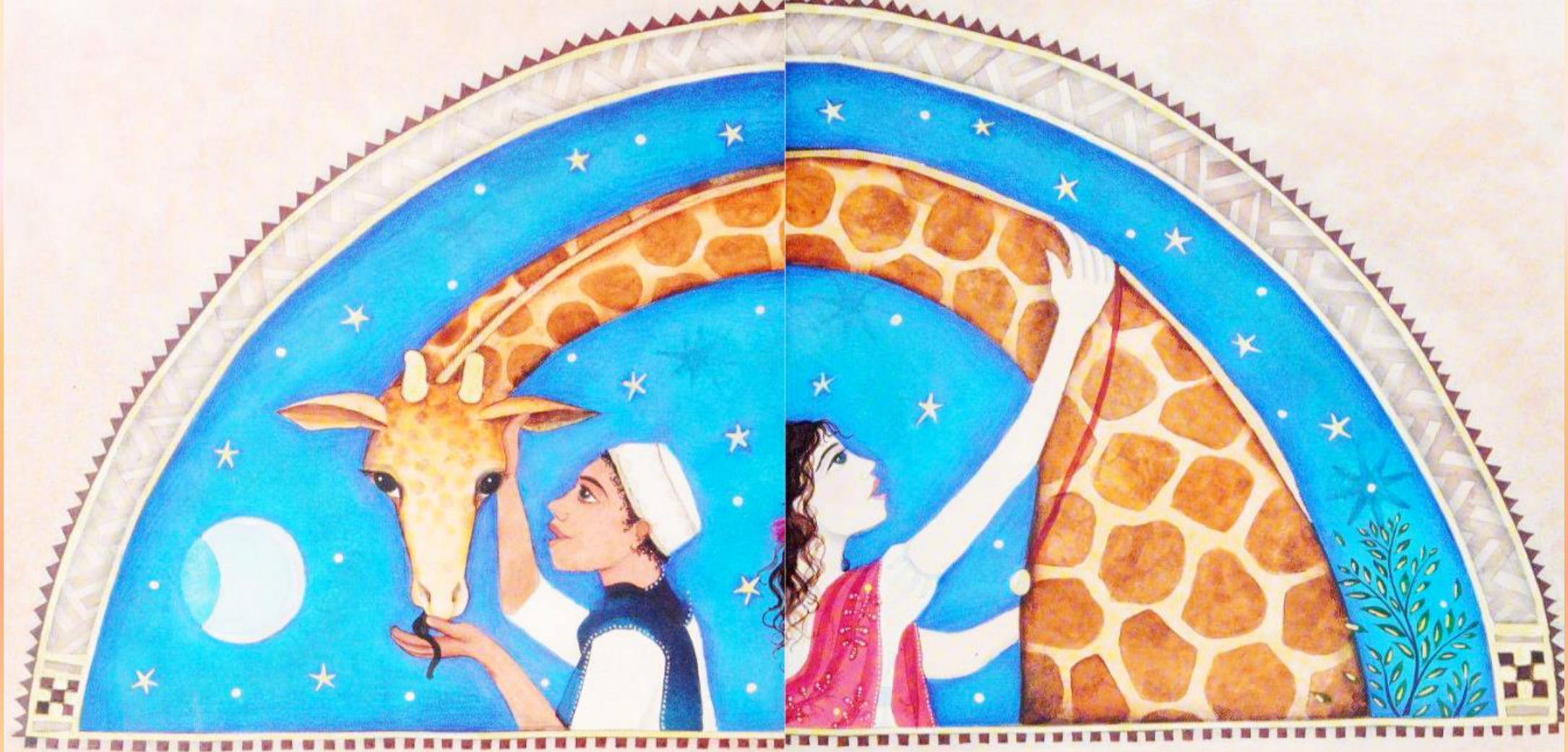
उसने देखा कि अतीर, ज़ेराफ़ा के कान में कुछ फुसफुसा रहा था.

अतीर उसे दूर के गर्म देश की कहानियाँ सुना रहा था

जहाँ घास लंबी होती थी और बबूल का स्वाद मीठा होता था.

उसने उसके कानों में झील और सितारों की कहानियाँ फुसफुसाकर सुनाईं

जो आकाश को फ़टे दूध में बदल देती थीं

और साथ में गर्म हवा की भी.

फिर वे चुपचाप खड़े हो गए और उन्होंने पेरिस की रोशनी को निहारा.
और उन शामों को, जब हवा विशेष रूप से सुहावनी होती थी,
तीनों ने अपना चेहरा दक्षिण की ओर किया...
और फिर गर्म हवा में उन्होंने अफ्रीका के चुंबन को महसूस किया.
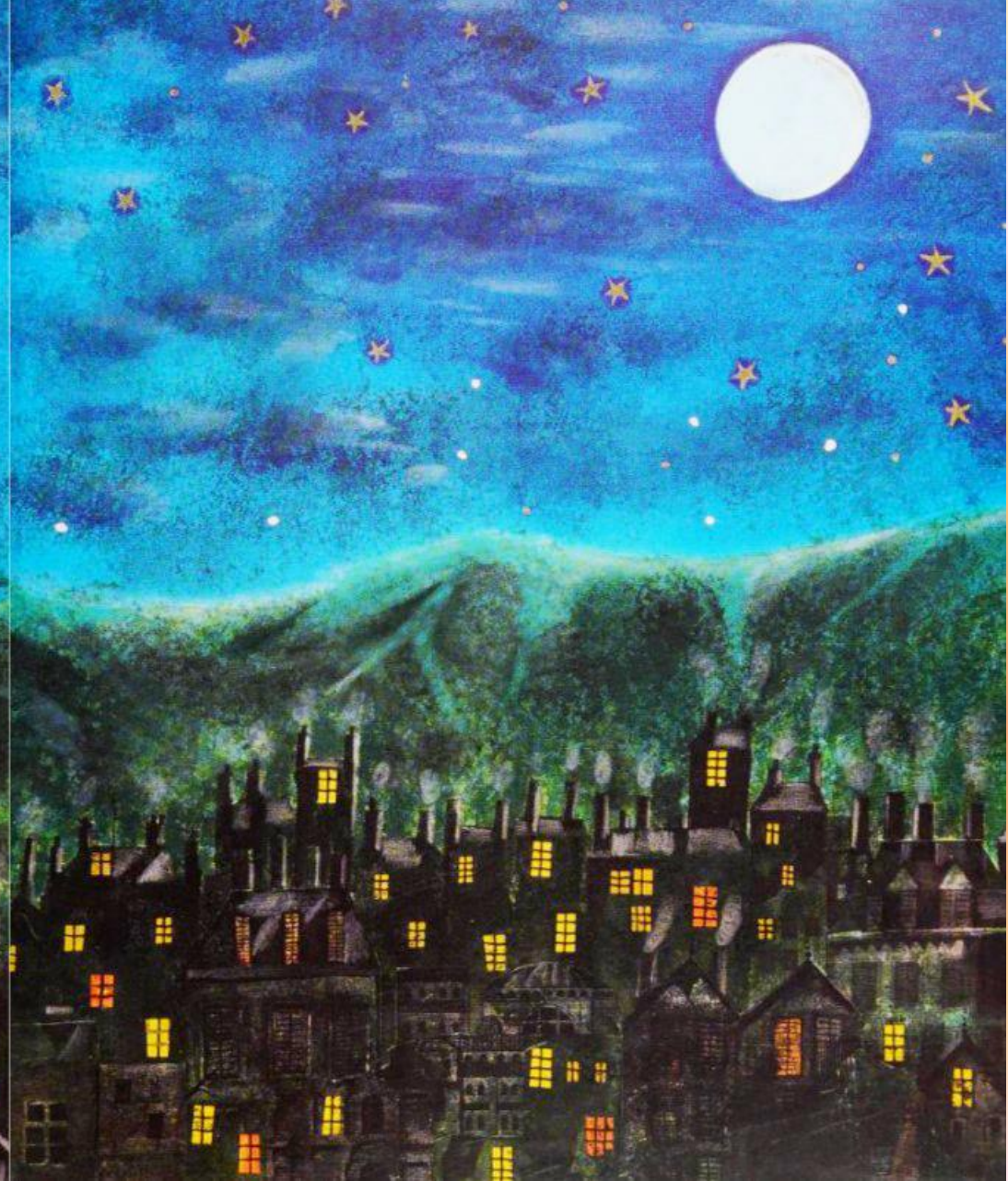
असली ज़ेराफ़ा के बारे में

मुहम्मद अली मिस्र का एक क्रूर शासक था जो फ्रांस के राजा चार्ल्स दशम से दोस्ती करना चाहता था. जब उसने सुना कि राजा अजीबो-गरीब जानवरों के संग्रह की योजना बना रहा था, तो उसने फैसला किया कि राजा के लिए एक जिराफ़ बिल्कुल सही उपहार होगा.

1824 में अफ्रीका के मैदानों में एक शिशु जिराफ़ को पकड़ा गया था, लेकिन वह चलने में बहुत कमज़ोर थी और इसलिए उसे ऊँट पर बाँधकर नील नदी के किनारे ले जाया गया. जिराफ़ को फेलुका नामक एक छोटी नाव पर लादा गया और नदी के रास्ते भूमध्य सागर तक ले जाया गया. यहाँ, उसे एक बड़े जहाज पर लादा गया और समुद्र के पार फ्रांस के मार्सिले ले जाया गया. लेकिन जब वह वहां पहुँची, तो किसी को नहीं पता था कि जिराफ़, पेरिस तक कैसे पहुँचेगी जहाँ राजा रहता था. अंततः यह निर्णय लिया गया कि वह पैदल ही चलकर जाएगी.

उस पूरी यात्रा में, जो उसे ऊँट से बाँधने से शुरू हुई, नील नदी की 2,000 मील की यात्रा, भूमध्य सागर के पार तीन सप्ताह का जहाज़ सफर और अंत में मार्सिले से पेरिस तक 550 मील की पैदल यात्रा, में ढाई साल का समय लगा. जब वह पेरिस पहुँची, तब तक जिराफ़ चार मीटर ऊंची हो चुकी थी और वह फ्रांस में देखी गई पहली जिराफ़ थी. वर्ष 1827 था.

वह अपने रखवाले अतीर के साथ जार्डिन डेस प्लांट्स में ला रोटोंड नामक एक इमारत में रहती थी. बारह साल बाद वहां एक दूसरे युवा मादा जिराफ़ को नील नदी के होकर लाया गया और उसे मादा जिराफ के साथ रखने के लिए पेरिस भेजा गया. 18 साल तक पेरिस में रहने के बाद 12 जनवरी 1845 को ज़ेराफ़ा की बुढ़ापे में मृत्यु हो गई. अतीर तभी भी उसके साथ था. ला रोटोंडे अभी भी जार्डिन डेस प्लांट्स में खड़ा है और अगर आप वहां किसी शांत दिन जाएँ तो अपनी आँखें बंद करें. तब शायद आप उस गर्म हवा का एहसास कर पाएंगे और खुद को ज़ेराफ़ा, अतीर और लुईस मैरी थेरेसा के साथ वहाँ होने की कल्पना कर पाएंगे.